اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह ﷻ के निन्नान्वे (99) नाम

तहरीर: अल-शैय्ख़ अब्दुल मोह्सिनुल इबाद अल-मदनी

तर्जुमा व तहक़ीक़ व हवाशी: हाफ़िज़ ज़ुबैय्र अली ज़ई

इब्ने अबी ज़ैय्द अल क़ैय्रवानी[1] फ़रमाते हैं कि: “ وله الأسماء الحسنى والصفات العلىٰ ” "और इसी (अल्लाह) के लिए अस्मा-ए- हुस्ना और आली सफ़ात हैं। (मुक़दमतुर्रिसालह इब्ने अबी ज़ैय्दुल क़ैय्रवानी मउश्शरह: क़तफ़ुलजनी अल दानी:9स.82) इसकी शरह में शैय्ख़ अब्दुल मुह्सिन अल इबादुलमदनी[2] फ़रमाते हैं कि:

❶ अल्लाह ﷻ की नाम की सिफ़ात, इल्मे ग़ैय्ब से हैं जिनके बारे में नाज़िल शुदह वहीह : अल्लाह ﷻ की किताब और इसके रसूल ﷺ के बग़ैर कलाम करना जाइज़ नहीं है। अस्माअ (नामों) और सिफ़ात में से सिर्फ़ उसी का इस्बात (व इक़रार) करना चाहिए जिसे अल्लाह ﷻ ने अपने लिए या इसके रसूल ने उस (अल्लाह) के लिए साबित क़रार दिया है,वो सिफ़ात जो अल्लाह ﷻ की शान के लाइक़ हैं, कैफ़ियत (के बारे में सवाल) और तम्सील (मख़्लूक़ से मिसाल देना) के बग़ैर, तहरीफ़ और तअतील (मुअतील क़रार देने) से बचते हुए (और) हर उस चीज़ से तन्ज़िया (बरीउज़्ज़मा और पाक होने) का अक़ीदह रखते हुए इक़रार करना चाहिए जैसा के इर्शादे बारी तआला है: ﴿لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ﴾ इस (अल्लाह) की मिसल कोई चीज़ नहीं और वो समीअ (सुनने वाला) बसीर (देखने वाला) है। (सूरह अस्शुरा:11)

❷ अल्लाह ﷻ के नामों का ज़िक्र क़ुरआन-ए-करीम में आया है, अल्लाह ने इन्हें अस्मा-ए-हुस्ना क़रार दिया है। इर्शादे बारी तआला है: ﴿وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ۪﴾ और अल्लाह ﷻ के अस्मा-ए-हुस्ना (बहतरीन नाम) हैं, पस तुम इसे इन (नामों) के साथ पुकारो। (सूरह अल अअराफ़:180) अल्लाह ﷻ फ़र्माता है ﴿اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى﴾ अल्लाह ﷻ वो है जिसके सिवा कोई दूसरा कोई इला (मअबूद बर्हक़) नहीं, उसी के अस्मा-ए-हुस्ना हैं (सुरह ताहा:8)

अल्लाह ﷻ का इर्शाद है के ﴿هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ﴾ वही अल्लाह ख़ालिक़, बारीअ तआला (और) मुसव्विर (रूप देने वाला) है, इसी के उस्माए हुस्ना हैं (सुरह अल हश्र:24) अल्लाह ﷻ के अस्मा-ए-हुस्ना का मतलब ये है के वो (ख़ुबसूरती में) हुस्न के बुलन्द तरीन और अअला तरीन मक़ाम पर पहुंचे हुए हैं। इन्हें सिर्फ़ अच्छे नाम ही नहीं कहा जाता बल्के अस्मा-ए-हुस्ना कहा जाता है जैसा के इन (ऊपर दी गई) आयात-ए-करीमा से साबित है।

---

(1) अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह बिन अबी ज़ैय्द, तौफ़ी 386 हि०, इनके बारे में हाफ़िज़ ज़हबी लिखते हैं के:

“وكان رحمه اللّٰه على طريقة السلف الأصول، لا يروى الكلام ولا يتأوّل”:

(सीर अअलामुन्नब्लाअ 17/12) व सक़ा अलक़ुआबसी वग़ैरह देखिए मदरसतुल हदीसुल क़ैय्रवान सफ्ह: 643

(2) जज़ीरतुल अरब के किबार उलमा में से हैं, देखिए अल हदीस :14 सफ्ह: 33

3 अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सारे नाम मुश्तक़ (अल्फ़ाज़ व कलाम से निकाले गए) हैं जो के मआनी पर दलालत करते हैं (और) ये (इसकी) सिफ़ात हैं। मसलन अज़ीज़ इज़्ज़त पर, हकीम हिक्मत पर, करीम करम पर, अज़ीम अज़्मत पर, लतीफ़ लुत्फ़ पर, और रहमानुर्रहीम रहमत पर दलालत करते हैं, और यही मफ़्हूम दूसरे नामों में भी है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नामों में कोई इस्म जाहद नहीं। बाज़ उलमा ने जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नामों में **"अल दहर"** शुमार किया है तो सहीह नहीं है। हदीसे क़ुदसी है (के अल्लाह عَزَّوَजَلَّ फ़र्माता है):

"يـؤ ذيـنـى ابن آدم يسبّ الدهر وأنا الدهر بيدي الأمر أقلبُ الليل والنهار" इब्ने आदम मुझे ऐय्ज़ा (तकलीफ़) देता है (यानी ग़ज़ब दिलाता है) वो अल दहर (ज़माने) को गालियां देता है और मैं अल दहर (बदलाने वाला) हूं। इख़्तियार मेरे हाथ में है, दिन और रात को मैं ही फैरता हूं (सहीह बुख़ारी:4826 व सहीह मुस्लिम:2246) ये हदीस इस पर दलालत नहीं करती है के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नामों में "अल दहर" भी है क्यूँकि अल दहर ज़माने को कहते हैं और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही दिन व रात को फ़ेरता (पै दर पै लाता) है, पस जिसने मुक़ल्लब (जिसे फैरा जाता है) यानी ज़माने को गाली दी तो इसकी गाली मुक़्लिब (जो फैरने वाला है) यानी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ लौट जाती है। इसको अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अपने क़ौल "इख़्तियार मेरे हाथ में है, दिन और रात को मैं फैरता हूं" से ब्यान किया है। रहीं सिफ़ात तो हर सिफ़्त से नाम नहीं निकाला जाता क्यूँकि बाज़ सिफ़ाते बारी तआला ज़ाती हैं: अलवजह (चहरह) यद (हाथ) और क़दम। इनसे नामों का इस्तख़्राज नहीं होता। और अल्लाह की बाज़ सिफ़ात फ़अलिया हैं :अल अस्तहज़ाअ, कैय्द और मकर। इनसे नाम नहीं निकाले जाते और ना तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को माकर, मस्तहज़ई और काइद कहना जाइज़ है।[1]

मैं कहता हूं के बात से बात निकलती है। रसूलुल्लाह ﷺ के अस्मा-ए-साबिता मुश्तक़ हैं जो मआनी पर दलालत करते हैं, इनमें कोई इस्मा जामद नहीं है और ना आप ﷺ के नामों में त ओर का कोई सबूत है।[2] इब्न अलक़ैय्म رَحِمَهُ الله लिखते हैं के: क़ुरआन और सूरतों के नामों के साथ नाम नाम रखना मम्नूअ है, जैसे ताहा, यासीन और हामीम, सुहैय्ली (एक मशहूर आलिम) ने ज़िक्र किया है के (इमाम) मालिक ने यासीन नाम रखने को मकरूह क़रार दिया है।[3] अवाम जो समझते हैं के यासीन और तुआहा नबी-ए-पाक ﷺ के नामों में से हैं, तो ये सहीह नहीं है। इस बारे में कोई हदीस नहीं, ना सहीह ना हसन और ना मुर्सल (यानी मुन्तक़अ) और ना किसी सहाबी का क़ौल है। ये हुरूफ़ (मुक़तआत) अलम, हम और अलर वग़ैरह की तरह हैं।" (तुहफ़तुल मौदूद सफ्ह:127) हो सकता है अवाम की ग़लती की वजह ये हो के ये सूरत तुआहा और सूरत यस में इन हुरूफ़ मुक़तआत के बाद नबी-ए-करीम ﷺ से ख़िताब किया गया है। इस वजह से ये लोग इन्हें आप ﷺ के नामों में से समझ बैठे हैं। हालान्के सूरत अअराफ़ और सूरत इब्राहीम में भी हुरूफ़े मुक़तआत के बाद नबी-ए-करीम ﷺ को मुख़ातिब किया है।और ये नहीं कहा जाता के अलमस और अलर भी आप ﷺ के नामों में से हैं।

---

(1) अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ बुरी सिफ़ात मस्लन " "امکانِ کذبِ باری تعالیٰ" " का इन्तिसाब सरीहन कुफ़्र है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से ज़्यादह सच्चा कोई नहीं है और वो तमाम बुरी सिफ़ात से पाक है। जो शख़्स अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के साथ बुरी सिफ़ात मन्सूब करता है वो काफ़िर है।
تعالى الله عما يقولون علواً كبيرًا.

(2) बाज़ लोगों ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के निन्नान्वे नामों की मुशाबहत में नबी-ए-करीम ﷺ के भी निन्नान्वे नाम बना रखे हैं। इसका कोई सबूत किताब व सुन्नत में नहीं है।

(3) इसकी सनद इमाम मालिक رَحِمَهُ الله तक मालूम नहीं है। वल्लाहु आलम |

4 अल्लाह ﷻ के नाम किसी (ख़ास) तअदाद में महसूर नहीं हैं बल्के इनमें से बाज़ नाम ऐसे हैं जो अल्लाह ﷻ ने लोगों को बताए हैं और बाज़ अपने इल्म ग़ैय्ब में रखा है। इस बात की दलील वो हदीस है जिसे (सय्यिद्ना) इब्ने मस्ऊद ؓ ने रिवायत किया है के रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया: जो आदमी किसी मुसीबत और ग़म में मुब्तला हो, फिर ये दुआ पढ़े:

"اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ عَبْدُکَ ،ابنُ عَبْدُکَ ،ابنُ اَمَتِکَ ، نَاصِیَتِیْ بِیَدِکَ ،مَاضٍ فِيَّ حُکْمُکَ ،
عَدْلٌ فِيَّ قَضَاءُکَ ،أَسْأَلُکَ بِکُلِّ اسْمٍ ھُوَلَکَ،سَمَّیْتَ بِهِ نَفْسَکَ ، أَوْعَلَّمْتَهُ أَحَداً مِّنْ خَلْقِکَ ،
أَوْ أَنْزَلْتَهُ فِیْ کِتَابِکَ ،أَوِ اسْتَأْثَرْتَ بِهِ فِیْ عِلْمِ الْغَیْبِ عِنْدَکَ،أَنْ تَجْعَلَ الْقُرْآنَ رَبِیْعَ قَلْبِیْ وَنُوْرَ
صَدْرِیْ وَجَلَاءَ حُزْنِیْ وَذَھَابَ ھَمِّیْ"

ऐ अल्लाह बेशक मैं तेरा बन्दह हूं तेरे बन्दे का बेटा हूं तेरी बन्दी का बेटा हूं, मेरी पैशानी तेरे हाथ में है। तेरा हुक्म मुझ पर जारी व सारी है। मेरे बारे में तेरा फ़ैसला अदल व इन्साफ़ वाला है। मैं तुझसे तेरे हर नाम के साथ सवाल करता हूं, जो नाम तूने अपने लिए रखा है या अपने पास इल्मुल ग़ैय्ब में ही रख लिया है। तू क़ुरआन को मेरे दिल की बहार, मेरे सीने का नूर बना दे और मेरी मुसीबत व ग़म को दूर कर दे, तो अल्लाह ﷻ इसके ग़म व मुसीबत को दूर कर देता है और इसके बदले इसे ख़ुशी अता फ़र्माता है। कहा गया के: या रसूलुल्लाह ﷺ! क्या हम इस (दुआ) को याद कर लें? तो आप ﷺ ने फ़र्माया: जो शख़्स इसे सुन ले तो चाहिए के वो इसे याद कर ले (मस्नद अहमद 1/391 ह. 3712) इस रिवायतको शुऐब अर्नौवत और इनके साथियों ने ज़ईफ़ कहा है लेकिन हाफ़िज़ इब्ने हजर ने इसे हसन और (शैय्ख़) अलबानी ने अल सिल्सिलतुस्सहीहह (199, 198) में सहीह कहा है। इब्न अलक़ैय्म ने अपनी किताब शिफ़ाउल अलील के सत्ताइस्वें बाब में इस हदीस को सहीह[1] क़रार दे कर इसकी लम्बी शरह की है (स. 369 त 374) अस्ल ये है के (अल्लाह ﷻ) के नाम किसी ख़ास तअदाद में मुन्हसिर नहीं हैं, सिवाए इसके के कोई दलील इस पर दलालत करे, और मुझे इसकी कोई दलील मालूम नहीं है। रही वो हदीस जिसे बुख़ारी (2736, 2410, 7392) और मुसलिम (2677) ने (सय्यिद्ना) अबू हुरैय्रह ؓ से रिवायत किया है बेशक रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़र्माया: "अल्लाह ﷻ के निन्नान्वे (यानी) एक कम सौ नाम हैं, जिसने इन्हें याद कर लिया वो जन्नत में दाख़िल होगा" ये हदीस इस तअदाद (निन्नान्वे) में, अल्लाह ﷻ के नामों को मुन्हसिर करनेकी दलील नहीं है बल्के ये तो इस पर दलालत करती है के अल्लाह ﷻ के नामों में से निन्नान्वे नाम ऐसे हैं, जिन्हें अगर कोई याद करे तो जन्नत में दाख़िल होगा। जैसे अगर कोई कहे के मेरे पास सौ किताबें हैं जिन्हें मैंने तालिबे इल्मों के लिए तय्यार किया है तो ये इसकी दलील नहीं है के इसके पास सौ से ज़्यादह किताबें नहीं हैं।

---

(1) इस रिवायत की सनद हसन है। इसका एक रावी अबू सलमा अल जहनी है जिसे बाज़ उलमा ने मज्हूल क़रार दिया है लेकिन इब्ने हबान और हाकिम (बतसहीह हदीसह 1/509, 510) ने इसकी तौसीक़ की है लिहाज़ा ये रावी हसनुल हदीस है। फ़ैय्ज़ल बिन मर्ज़ौक़ भी हसनुल हदीस है। वल्हम्दुलिल्लाह

5 अल्लाह ﷻ के (निन्नान्वे) नामों की तअदाद ब्यान करने के बारे में कोई हदीस साबित नहीं है। (देखिए स. 41) बाज़ उलमा ने इज्तहाद करके किताब व सुन्नत से (अल्लाह ﷻ के) निन्नान्वे नाम निकाले हैं, इन उलमा में से हाफ़िज़ इब्ने हजर ने फ़तहुल बारी (11/215) और अत्तख़्लीसुल हबैय्र (4/172) में, और शैय्ख़ मुहम्मद बिन अल मसैय्मीन ने अपनी किताब "अल क़वाइदुल मस्ला" (स. 15, 16) में ये तअदाद जमा की है। ये तीनों किताबें अक्सर नामों (के ज़िक्र) में एक दूसरे से मुत्तफ़िक़ हैं और बाज़ में ऐसे नाम मज़्कूर हैं जो दूसरी किताब में नहीं हैं। अल्लाह के अस्मा-ए-हुस्नामें से निन्नान्वे नाम, हुरूफ़ तहज्जी पर मुरत्तिब किए हुए, मैं यहां ब्यान करता हूं। हर नाम के साथ किताब व सुन्नत से दलील मज़्कूर है। इन नामों में तीन मज़्कूरह किताबों पर दो नाम इज़ाफ़ह किए गए हैं। " الستير اور الديّان " (अल-सतीर और अल-दय्यान)

1 **اللّٰه** "अल्लाह", इसका इत्लाक़ ज़ाती बारी तआला पर ही होता है। ये बाज़ औक़ात (जुम्लों में) मब्तदा बन कर आता है और अपने नामों की ख़बर देता है। मसलन ﴿وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ﴾ और अल्लाह ग़फ़ूरुर्रहीम है (अल बकरा:128) ﴿وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ﴾ और अल्लाह अज़ीज़ (ज़बरदस्त) हकीम है (अल बकरा:228) और अल्लाह ﷻ की तरफ़ इसके नाम मन्सूब किए जाते हैं जैसा के इर्शादे बारी तआला है ﴿وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى﴾ और अल्लाह के लिए अस्मा-ए-हुस्ना हैं (अल अअराफ़:180) और अल्लाह का इर्शादे बारी तआला है के ﴿لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى﴾ इसी के लिए अस्मा-ए-हुस्ना हैं (ताहा:8)

2 **اَلْاٰخِرُ** "अल आख़िर", इसकी दलील आयत ﴿هُوَالْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ﴾ है, वही अव्वल और वही आख़िर है (अल हदीद:3)

3 **اَلْاَحَدُ** "अल अहद", इसकी दलील ये है ﴿قُلْ هُوَاللّٰهُ اَحَدٌ﴾ कह दो, वो अल्लाह एक है (अल इख़्लास:1)

4 **اَلْاَعْلٰى** "अल अअला", इसकी दलील ये है ﴿سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلٰى﴾ अपने अअला रब्ब की तस्बीह ब्यान कर (अल अअला:1)

5 **اَلْاَكْرَمُ** "अल अकरम", इसकी दलील ये है ﴿اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ﴾ पढ़ और तेरा रब अकरम (सबसे ज़्यादह करम करने वाला) है (अल अलक़:3)

6 **اَلْاِلٰهُ** "अल इल्हु", इसकी दलील इर्शादे बारी तआला है
﴿وَقَالَ اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوْٓا اِلٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۚ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ﴾
और अल्लाह ने फ़र्माया: दो इला ना बनाओ, वो तो सिर्फ़ एक इला (माबूद बर्हक़) है, पस सिर्फ़ मुझ ही से डरो (अल नहल:51)

7 **اَلْاَوَّلُ** "अल अव्वलु", इसकी दलील ये आयत है के ﴿هُوَالْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ﴾ वही अव्वल [1] और वही आख़िर है (अल हदीद:30)

---

(1) अल अव्वल से मुराद अल्लाह ﷻ है। देखिए सहीह मुसलिम (2713)
बाअज़ अन्नास "अल अव्वल से मुराद नबी लेते है लेकिन इसकी कोई दलील किताब व सुन्नत व इज्मा व आसार सलफ़ स्वलाहीन से साबित नहीं है |

8 اَلْبَارِئُ، "अल बारिय", इसकी दलील ये है ﴿هُوَاللّٰهُ الْخٰلِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ﴾ वही अल्लाह ख़ालिक़, बारी (पैदा करने वाला, और) मुसव्विर है (अल हशर:24)

9 اَلْبَاطِنُ، "अल बातिनु", इसकी दलील ये है ﴿هُوَالْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ﴾ वही अव्वल, आख़िर, ज़ाहिर (ग़ालिब) और बातिन है (अल हदीद:3)

10 اَلْبَرُّ، "अल बर्रु", इसकी दलील ये है ﴿اِنَّهٗ هُوَالْبَرُّ الرَّحِيْمُ﴾ बेशक वही बर्र (बड़ा मुह्सिन, और) रहीम (इन्तिहाई महरबान) है (अत्तूर:28)

11 اَلْبَصِيْرُ، "अल बसीरु", इसकी दलील ये है ﴿لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَیْءٌ ۚ وَهُوَالسَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ﴾ इस (अल्लाह) की मिसल कोई चीज़ नहीं है और वो समीअ (सुनने वाला) बसीर (देखने वाला) है (सूरह अस्शुरा:11)

12 اَلتَّوَّابُ، "अत्तव्वाबू",इसकी दलील ये है के ﴿وَاتَّقُوااللّٰهَ ۚ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ﴾ और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह तव्वाब (तौबा क़बूल फ़र्माने वाला) रहीम है (अल हुजरात:12)

13 اَلْجَبَّارُ، "अल जब्बारु", इसकी दलील ये है:

﴿هُوَاللّٰهُ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِکُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ﴾ अल्लाह वही ज़ात है जिसके इलावह दूसरा कोई इला (मअबूद बरहक़) नहीं, वही अल-मालिक (बादशाह), अल क़ुद्दूस, अस्सलाम, अल मुअमिन, अल मुहईमिन (निगहबान व मुहाफ़िज़), अल जब्बार (और) अल मुतकब्बिर है (अल हशर:23)

14 اَلْجَمِيْلُ، "अल जमीलु", इसकी दलील ये हदीस है "إنّ اللّٰه جميل يحب الجمال" बेशक अल्लाह ﷻ जमील (ख़ूबसूरत) है, जमाल (ख़ूबसूरती) को पसन्द करता है (सहीह मुसलिम : 147)

15 اَلْحَافِظُ، "अल हाफ़िज़ु", इसकी दलील ये आयत है ﴿فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا ۖ وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ﴾ पस अल्लाह बहतरीन हाफ़िज़ (निगहबान) है और वो सबसे ज़्यादह रहम करने वाला है (यूसुफ़:46)

16 اَلْحَسِيْبُ، "अल हसीबु", इसकी दलील ये है ﴿وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا﴾ और अल्लाह ही को हसीब (हिसाब लेने वाला) समझना काफ़ी है (निसाअ:6)

17 اَلْحَفِيْظُ، "अल हफ़ीज़ु", इसकी दलील ये है ﴿اِنَّ رَبِّیْ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ حَفِيْظٌ﴾ बेशक मेरा रब हर चीज़ पर हफ़ीज़ (हिफ़ाज़त व निगहबानी करने वाला) है (हूद:57)

18 اَلْحَقُّ، "अल हक़्क़ु", इसकी दलील ये है ﴿ذٰلِکَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَالْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَالْبَاطِلُ﴾ ये इसलिए के बेशक अल्लाह ही हक़ है और ये (मुश्रिकीन) उस (अल्लाह) के सिवा जिसको पुकारते हैं वो बातिल है (अल हज्ज:62)

19 اَلْحَكَمُ، "अल हक्मु", इसकी दलील वो हदीस है जिसमें आया है के "إن اللّٰه هوا الحكم وإليه الحكم" बेशक अल्लाह ﷻ ही हकम (फ़ैसला करने वाला) है और इसी की तरफ़ फ़ैसला ले जाया जाता है (सुनन अबी दाऊद:4955 व इस्नाद हसन)

20 اَلْحَكِيْمُ، "अल हकीमु", इसकी दलील ये आयत है

﴿سَبَّحَ لِلّٰهِ مَافِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۚ وَهُوَالْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ﴾

आसमानों और ज़मीन में जो कुछ भी है, सब अल्लाह की तस्बीह ब्यान करते हैं और वही अज़ीज़ (ज़बरदस्त और) हकीम (हिक्मत वाला) है (अल हशर:1)

21 اَلْحَلِيْمُ، "अल हलीमु", इसकी दलील ये है ﴿وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ﴾ और अल्लाह ग़फ़ूरुर्हलीम (बरदबार) है (अल बक़रह:225)

22 اَلْحَمِيْدُ، "अल हमीदु", इसकी दलील ये है ﴿وَهُوَالْوَلِيُّ الْحَمِيْدُ﴾ और वही (अल्लाह) वली (मददगार) हमीद (हम्द वाला) है (सूरह अस्शुरा:11)

23 اَلْحَيُّ، "अल हय्यु", इसकी दलील ये है ﴿هُوَالْحَيُّ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ؕ﴾ वही अल हय्यु (जिंदा जावेद) है, इसके सिवा कोई इला नहीं, पस ख़ालिस इसी के दीन के होकर उसे ही पुकारो (अल मुअमिन:65)

24 اَلْحَيِّيُ، "अल हय्यीयु", इसकी दलील हदीस है के "إن اللّٰه عزوجل حيي ستير، يحب الحياء والستر" बेशक अल्ल्ह ﷻ हय्यीयु (हया करने वाला, और) सतैय्र (परदह डालने वाला) है। वो हया और (दूसरों के ऐय्बों पर) परदह डालने को पसन्द करता है (सुनन अबी दाऊद, 4012 वग़ैरा व इस्नाद हसन)

25 اَلْخَالِقُ، "अल ख़ालिकु", इसकी दलील ये आयत है के ﴿هُوَاللّٰهُ الْخٰلِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ﴾ देखिए फिक्रह:8

26 اَلْخَبِيْرُ، "अल ख़बीरु", इसकी दलील ये है ﴿قَالَ نَبَّاَنِیَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ﴾ इस (रसूल) ने कहा: मुझे अलीम (व) ख़बीर (ख़बर रखने वाला है) ने ख़बर दी है (अल तहरीम:3)

27 اَلْخَلَّاقُ، "अल ख़ल्लाकु", इसकी दलील ये है ﴿اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ﴾ बेशक तेरा रब ही ख़ल्लाक़ (बहतरीन पैदा करने वाला) अलीम है (अल हजर:86)

28 اَلدَّيَّانُ، "अदद्य्यानु", इसकी दलील, रसूलुल्लाह ﷺ की हदीस है के अल्लाह ﷻ बन्दों या इन्सानों को(दोबारह ज़िन्दह करके) इकट्ठा करेगा, लोग नंगे, बग़ैर ख़तना किए और बहम होंगे (रावी कहते है के) हमने पूछा: बहम किसे कहते हैं? आप ﷺ ने फ़र्माया: जिनके साथ कोई चीज़ ना हो, फिर अल्लाह ﷻ ऐसी आवाज़ से अपने बन्दों को पुकारेगा जिस आवाज़ को दूर और क़रीब वाले एक जैसा सुनेंगे: मैं/ अल मलिक हूं, मैं अल द्य्यान हूं इलख़ (इसे हाकिम ने

अल मुस्तद्रिक में दो जगह रिवायत किया है 2/438,574) हाकिम और ज़हबी ने सहीह और हाफ़िज़ (इब्ने हजर) ने फ़तहुल बारी में (1/174) और अलबानी ने सहीह अल अदबुल मुफ़रद (746) में हसन कहा है।

29 اَلـرَّبُّ، "अर्रब्ब", इसकी दलील ये आयत है ﴿سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ﴾ सलामती हो, ये रब रहीम का क़ौल है (यासीन :58)

30 اَلرَّحْمٰنُ، "अर्रहमान", इसकी दलील ये है ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ﴾ सब तअरीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो रब्बुल आलमीन है, रहमान (बहुत रहम करने वाला) रहीम है (अल फ़ातिह:1,2)

31 اَلرَّحِيْمُ، "अर्रहीम", इसकी दलील ये है ﴿وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ﴾ और तुम्हारा इला (मअबूद बरहक़) एक इला है, इसके सिवा दूसरा कोई इला नहीं, वही रहमान (व) रहीम है (अल बक़रह:163)

32 اَلرَّزَّاقُ، "अर्रज़्ज़ाक़", इसकी दलील ये है ﴿اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ﴾ बेशक अल्लाह ही रज़्ज़ाक़ (रिज़्क़ देने वाला) क़ुव्वत वाला, मतीन (मज़्बूत व ताक़तवर) है (अल ज़ारियात: 58)

33 اَلرَّفِيْقُ، "अर्रफ़ीक़", इसकी दलील हदीस है "إنّ الله رفيق يحبّ الرفق" बेशक अल्लाह ﷻ रफ़ीक़ (मेहरबान दोस्त) है, नरमी को पसन्द करता है। (सहीह बुख़ारी:6927,सहीह मुसलिम: 2593)

34 اَلرَّقِيْبُ، "अर्रक़ीबु", इसकी दलील ये आयत है ﴿وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ رَّقِيْبًا﴾ और अल्लाह हर चीज़ पर रक़ीब (निगहबान व मुहाफ़िज़) है (अल अहज़ाब:52)

35 اَلرَّءُوْفُ، "अर्रऊफु", इसकी दलील ये है ﴿اِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ﴾ बेशक तुम्हारा रब रऊफ़ (इन्तिहाई महरबान और) रहीम है (अल नहल:7)

36 اَلسُّبُّوْحُ، "अस्सुब्बूहु", इसकी दलील ये हदीस है के "سبوح قدوس ربّ الملائكة والرّوح" सुब्बूह (हर बुराई और ऐय्ब से बिल्कुल पाक और बरतर) क़ुद्दूस है, मलाइकह और रूह का रब है। (सहीह मुस्लिम:487)

37 اَلسِّتِّيْرُ، "अस्सित्तीरु", इसकी दलील इस्म अल हय्यी के तहत गुज़र चुकी है फ़िकरा:24

38 اَلسَّلَامُ، "अस्सलामु", दलील ये है ﴿هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ﴾ देखिये फ़िक्रा:13

39 اَلسَّمِيْعُ، "अस्समीउ", इसकी दलील ये है ﴿وَاللّٰهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ۚ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ بَصِيْرٌ﴾ और तुम्हारी गुफ़्तगू सुन रहा था, बेशक अल्लाह समीअ (सब सुनने वाला) बसीर है (अल मुजादिला:01)

40 اَلسَّيِّدُ، "अस्सय्यिदु", इसकी दलील में है "السيّد اللّٰه تبارک وتعالىٰ" अस्सय्यिदु (सरदार) अल्लाह ﷻ है। (सुनन अबी दाऊद: 4806 व इस्नादह सहीह)

41 اَلشَّافِيُ، "अश्शाफ़ियु", इसकी दलील हदीस है 'اشف أنت الشافي لاشافي إلا أنت' शिफ़ा दे तू (ही) शाफ़ी (शिफ़ा देने वाला) है, तेरे सिवा कोई शिफ़ा देने वाला नहीं। (सहीह बुख़ारी : 5742 व सहीह मुसलिम : 2191)

42 اَلشَّاكِرُ، "अश्शाकिरु", इसकी दलील ये आयत है ﴿وَكَانَ اللّٰهُ شَاكِراً عَلِيمًا﴾ और अल्लाह शाकिर (क़दरदान) अलीम है (निसा:147)

43 اَلشَّكُوْرُ، "अश्शकूरु", दलील ये है ﴿إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرٌ﴾ बेशक हमारा रब ज़रूर ग़फ़ूर शकूर (बहुद क़दरदान) है (फ़ातिर: 34)

44 اَلشَّهِيْدُ، "अश्शहीदु", इसकी दलील ये है ﴿أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ أَنَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ﴾ क्या आपके रब के लिए ये काफ़ी नहीं के वो हर चीज़ पर शहीद (गवाह) है (हम अल सज्दह:53)

45 اَلصَّمَدُ، "अस्समदु", दलील ये है ﴿اَللّٰهُ الصَّمَدُ﴾ अल्लाहुस्समद (बेनियाज़) है (अल अख़्लास:2)

46 اَلطَّيِّبُ، "अत्तयिबु", इसकी दलील ये हदीस है के "إن اللّٰه طيّب ولا يقبل إلا طيبًا" बेशक अल्लाह तय्यब (पाक) है और वो सिर्फ़ तय्यब ही क़ुबूल करता है (सहीह मुसलिम:1015)

47 اَلظَّاهِرُ، "अज़्ज़ाहिरु", इसकी दलील के लिए देखिए फ़िक्र:9

48 اَلْعَزِيْزُ، "अल अज़ीज़ु", इसकी दलील ये है ﴿يُسَبِّحُ لَهُ مَافِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ﴾ आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है उसी की तस्बीह करता है और वो अज़ीज़ (ज़बरदस्त) हकीम है (अल हशर:24)

49 اَلْعَظِيْمُ، "अल अज़ीमु", इसकी दलील ये है ﴿وَلَا يَئُوْدُهُ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ﴾ और इनकी हिफ़ाज़त उसे नहीं थकाती और वो अलियुल अज़ीम है (अल बकरा:255)

50 اَلْعَفُوُّ، "अल अफ़ुव्वु", दलील ये है ﴿وَإِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُوْرًا ۚ وَإِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ﴾ और बेशक ये लोग मुन्किर और झूटी बात कहते हैं, और बेशक अल्लाह अफ़ू (मुआफ़ करने वाला) ग़फ़ूर है (अल मुजादिला:2)

51 اَلْعَلِيْمُ، "अल अलीमु", दलील ये है ﴿وَاللّٰهُ مَوْلٰكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ﴾ और अल्लाह तुम्हारा मौला है और वो अलीम (सबसे ज़्यादह इल्म वाला) है (अल तहरीम: 2)

52 **اَلْعَلِیُّ،** "अल अलिय्यु" दलील ये है ﴿اِنَّهٗ عَلِیٌّ حَکِیۡمٌ﴾ बेशक वो अली (बुलन्द) हकीम है (अश्शूरा:51)

53 **اَلْغَالِبُ،** "अल ग़ालिबु", दलील ये है ﴿وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰۤی اَمۡرِهٖ وَلٰکِنَّ اَکۡثَرَ النَّاسِ لَا یَعۡلَمُوۡنَ﴾ और अल्लाह अपने अमर (हुक्म) पर ग़ालिब है, लेकिन बहुत से लोग नहीं जानते (यूसुफ़:21)

54 **اَلْغَفَّارُ،** "अल ग़फ़्फ़ारु", इसकी दलील ये है ﴿فَقُلۡتُ اسۡتَغۡفِرُوۡا رَبَّکُمۡ اِنَّهٗ کَانَ غَفَّارًا﴾ पस मैंने कहा: अपने रब से इस्तग़फ़ार करो (गुनाहों की मुआफ़ी मांगो) बेशक वो ग़फ़्फ़ार (गुनाह मुआफ़ फ़र्माने वाला) है (नूह : 10)

55 **اَلْغَفُوْرُ،** "अल ग़फ़ूरु", दलील ये है ﴿اِنَّ اللّٰهَ یَغۡفِرُ الذُّنُوۡبَ جَمِیۡعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الۡغَفُوۡرُ الرَّحِیۡمُ﴾ बेशक अल्लाह सारे गुनाह मुआफ़ कर देता है, बेशक वो ग़फ़ूर (गुनाह मुआफ़ फ़र्माने वाला) रहीम है (अल ज़ुमर:53)

56 **اَلْغَنِیُّ،** "अल ग़नीयु", दलील ये है ﴿وَاللّٰهُ الۡغَنِیُّ وَاَنۡتُمُ الۡفُقَرَآءُ ۚ﴾ और अल्लाह ग़नी है और तुम फ़क़ीर (मुहताज) हो। (मुहम्मद:38)

57 **اَلْفَتَّاحُ،** "अल फ़्त्ताहु", दलील ये है ﴿قُلۡ یَجۡمَعُ بَیۡنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ یَفۡتَحُ بَیۡنَنَا بِالۡحَقِّ ؕ وَهُوَ الۡفَتَّاحُ الۡعَلِیۡمُ﴾ कह दो, हमारा रब हमें इकट्ठा करेगा, फिर हक़ के साथ हमारे दर्मियान फ़ैसला कर देगा और वही फ़ताह (रहमत व रिज़्क़ के दरवाज़े खोलने वाला, फ़ैसला करने वाला) है (सबा: 26)

58 **اَلْقَادِرُ،** "अल क़ुआदिरु", दलील ये है
﴿قُلۡ هُوَ الۡقَادِرُ عَلٰۤی اَنۡ یَّبۡعَثَ عَلَیۡکُمۡ عَذَابًا مِّنۡ فَوۡقِکُمۡ اَوۡ مِنۡ تَحۡتِ اَرۡجُلِکُمۡ﴾

59 **اَلْقَاهِرُ،** "अल काहिरु", दलील ये है ﴿وَهُوَ الۡقَاهِرُ فَوۡقَ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ الۡحَکِیۡمُ الۡخَبِیۡرُ﴾ और वही अपने बन्दों पर काहिर (ग़ालिब) है और वही हकीम ख़बीर है (अल इन्आम: 18)

60 **اَلْقُدُّوْسُ،** "अल कुद्दूसु", दलील ये है:
﴿یُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الۡاَرۡضِ الۡمَلِکِ الۡقُدُّوۡسِ الۡعَزِیۡزِ الۡحَکِیۡمِ﴾
अल्लाह ही की तस्बीह ब्यान करता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है (वही) मलिक (बादशाह) कुद्दूस (अय्यूब व नक़ाइस से पाक व मन्ज़ह) हकीम है (अल जुमआ:1)

61 **اَلْقَدِیْرُ،** "अल क़दीरु", इसकी दलील ये है के
﴿تَبٰرَکَ الَّذِیۡ بِیَدِهِ الۡمُلۡکُ ۫ وَهُوَ عَلٰی کُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرُ﴾
बरकतों वाली है वो ज़ात जिसके हाथ में मुल्क (बादशाही) है और वो हर चीज़ पर क़दीर है (अल मुल्क:1)



62 اَلْقَرِيْبُ، "अल क़रीबु", दलील ये है ﴿وَاِذَا سَاَلَکَ عِبَادِیْ عَنِّیْ فَاِنِّیْ قَرِیْبٌ ط﴾ और जब मेरे बन्दे आपसे मेरे बारे में पूछते हैं तो (बता दें) बेशक मैं क़रीब हूं (अल बकरा:186)

63 اَلْقَهَّارُ، "अल क़ह्हारु", दलील ये है ﴿وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ﴾ और वो (सब) एक अल्लाह क़हार (सब पर क़ाहिर व ग़ालिब) के सामने खड़े हो जाएंगे (इब्राहीम:48)

64 اَلْقَوِیُّ، "अल क़विय्यु", दलील ये है ﴿یَرْزُقُ مَنْ یَّشَآءُ ج وَهُوَ الْقَوِیُّ الْعَزِیْزُ﴾ वो जिसे चाहता है रिज़्क़ देता है और वही अल क़वी (सबसे ज़्यादह क़ुव्वत वाला) अज़ीज़ है (अश्शूरा: 19)

65 اَلْقَيُّوْمُ، "अल क़य्यूमु", दलील ये है ﴿اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ج اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ج﴾ अल्लाह के सिवा कोई इला नहीं वही अल हय्यु (ज़िन्दह जावेद) अल क़य्यूम (बज़ाते ख़ुद क़ाइम व दाइम और हर चीज़ पर मुहाफ़िज़ व निगरान) है (अल बकरा:255)

66 اَلْكَبِيْرُ، "अल कबीरु", दलील ये है:

﴿ذٰلِکَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَالْحَقُّ وَاَنَّ مَا یَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ لا وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِیُّ الْكَبِیْرُ﴾ ये इसलिए के बेशक अल्लाह ही हक़ है और ये (मुश्रिकीन) उस (अल्लाह) के सिवा जिसको पुकारते हैं वो बातिल है और बेशक अल्लाह ही अल अलीयुलकबीर (सबसे बड़ा) है (अल हज्ज :62)

67 اَلْكَرِيْمُ، "अल करीमु", दलील ये है ﴿یٰۤاَیُّهَا الْاِنْسَانُ مَا غَرَّکَ بِرَبِّکَ الْکَرِیْمِ﴾ ऐ इन्सान! तुझे अपने करीम (करमों वाले) रब के बारे में किस चीज़ ने धोके में डाल दिया है? (??? : 6)

68 اَلْكَفِيْلُ، "अल कफ़ीलु", दलील ये आयत है:

﴿وَلَا تَنْقُضُوا الْاَیْمَانَ بَعْدَ تَوْكِیْدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللّٰهَ عَلَیْكُمْ كَفِیْلًا ط﴾ और मज़बूत क़समें खाने के बाद इन्हें ना तोड़ो और (हाल ये है के) तुमने अल्लाह को अपने ऊपर कफ़ील (किफ़ायत करने वाला, ज़ामिन) बना (यानी तस्लीम) कर रखा है। (अन नह्ल:91)

दूसरी दलील वो हदीस है जिसमें बनी इस्राइल के एक आदमी का क़िस्सा ब्यान हुआ है जिसने अपने क़र्ज़ दहनदह को कहा था "كفى بالله وكيلاً" अल्लाह का वकील होना काफ़ी है (सहीह बुख़ारी:2291)

69 اَللَّطِيْفُ، "अल लतीफ़ु", दलील ये है ﴿اَلَا یَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ط وَهُوَ اللَّطِیْفُ الْخَبِیْرُ﴾ क्या वो नहीं जानता जिसने पैदा किया है? और वही लतीफ़ (तमाम इस्रार से वाक़िफ़, बारीक बीन) ख़बीर है (अल मलिक:14)

70 اَلْمُبِيْنُ، "अल मुबीनु", दलील ये है ﴿یَوْمَئِذٍ یُّوَفِّیْهِمُ اللّٰهُ دِیْنَهُمُ الْحَقَّ وَیَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِیْنُ﴾ इस दिन अल्लाह इन्हें उनके दीन-ए-हक़ का पूरा बदला देगा और वो जान लेंगे के बेशक अल्लाह ही मुबीन (वाज़ह करने वाला) है (अन नूर:25)

71 اَلْمُتَعَالُ، "अलमुतआलु", दलील ये है ﴿عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ﴾
ग़ैय्ब व ज़ाहिर का जानने वाला, कबीर और मुतआल (बहुत बुलन्द) है (अल रअद:9)

72 اَلْمُتَكَبِّرُ، "अल मुतकब्बिरु", दलील ये है
﴿هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِکُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَیْمِنُ الْعَزِیْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَکَبِّرُ ط﴾
(देखिए फ़िक्रह:13)

73 اَلْمَتِيْنُ، "अल मतीनु", दलील ये है ﴿اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ﴾ (देखिए फ़िक्रह:32)

74 اَلْمُجِيْبُ، "अल मुजीबु", दलील ये है ﴿اِنَّ رَبِّیْ قَرِیْبٌ مُّجِیْبٌ﴾
बेशक मेरा रब क़रीब मुहजीब है (हूद : 61)

75 اَلْمَجِيْدُ، "अल मजीदु", दलील ये है, ﴿رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَکٰتُهٗ عَلَیْکُمْ اَهْلَ الْبَیْتِ ۚ اِنَّهٗ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ﴾
ऐ अहले बैय्त तुम पर अल्लाह की रहमत और बरकतें हों, बेशक वो (अल्लाह) हमीद मजीद (बुज़ुर्गी वाला) है (हूद :73)

76 اَلْمُحْسِنُ "अल मुह्सिनु", इसकी दलील हदीस है के "إن الله محسن يحبّ المحسنين"
बेशक अल्लाह मुह्सिन (अहसान करने वाला) है वो अहसान करने वालों को पसन्द करता है (الديات لابن أبي عاصم ص ٥٦ والكامل لابن عدى ٢١٤٥/٦ واخبار أصبهان لأبي نعيم ١١٣/٢، इसकी सनद हसन है जैसा के शैय्ख़ अलबानी ने सिलसिलातुस्सहीह: 470 में ज़िक्र किया है, नीज़ देखिए सहीह अल जामअ अस्सग़ीर:1819,1820) [व मुसन्निफ़ अब्दुर्राज़िक़ 4/491 ह. 8603 व सनद हसन, अब्दुर्रज़ाक़ सरह बिस्समाअ इन्दल तिब्रानी फ़िल कबीर 7/7121, दरवी अल बैय्हक़ी 9/280 बलफ़्ज़ : "إن الله محسان" व सनद सहीह/मुतर्जिम]

77 اَلْمُحِيْطُ، "अल मुहीतु", दलील ये है ﴿اَلَآ اِنَّهٗ بِکُلِّ شَیْءٍ مُّحِیْطٌ﴾
ख़बरदार, बेशक वो (अल्लाह) हर चीज़ को मुहीत (घेरे हुए) है (हामीम अस-सज्दह:54)

78 اَلْمُصَوِّرُ، "अल मुसव्विरु", दलील ये है ﴿هُوَ اللّٰهُ الْخٰلِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ﴾ देखिए फ़िक्रह:8

79 اَلْمُعْطِيْ، "अल मुअतिय्यु", दलील ये हदीस है "والله المعطي وأنا القاسم"
अल्लाह ﷻ देने वाला है और मैं तक़सीम करने वाला हूं (सहीह बुख़ारी:3116)

80 اَلْمُقْتَدِرُ، "अल मुक़्तदिरु", दलील ये आयत है ﴿وَکَانَ اللّٰهُ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ مُّقْتَدِرًا﴾
और अल्लाह हर चीज़ पर मुक़्तदिर (क़ुदरत रखने वाला) है। (अल कहफ़:45)

81 اَلْمُقَدِّمُ، "अल मुक़द्दिमु", दलील ये हदीस है "أنت المقدِّم وأنت المؤخّر" तू ही मुक़द्दिम (आगे लाने वाला) और तू ही मौअख़्ख़िर (पीछे हटाने वाला) है (सहीह बुख़ारी:1120 व सहीह मुस्लिम:771)

82 اَلْمُقِيتُ، "अल मुक़ीतु", दलील ये आयत है ﴿وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ مُّقِيتًا﴾ और अल्लाह हर चीज़ पर मुक़ीत (हर जानदार को रिज़्क़ और ख़ुराक अता करने वाला) है (अन्निसाअ:85)

83 اَلْمَلِكُ، "अल मलिकु", दलील ये आयत है ﴿هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوسُ﴾ (देखिए फ़िक़्रह: 13)

84 اَلْمَلِيكُ، "अल मलीकु", दलील ये है के ﴿فِىْ مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ﴾ वो मलीक (बादशाह) मुक़्तदिर के पास सच्ची बेठक में (बैठे) होंगे (अलक़मर:55)

85 اَلْمَنَّانُ، "अल मन्नानु", दलील हदीस है के "اللّٰهم إنّى أسئلک بأن لک الحمد لا إله إلا أنت المنان" ऐ अल्लाह ﷻ! मैं तुझसे सवाल करता हूं क्यूँकि तेरे लिए ही (हर क़िस्म) की हम्द है, तेरे सिवा कोई इला नहीं, तू अल मन्नान (अहसान करने वाला) है, सुनन अबी दाऊद:1495 व इस्नाद हसन)

86 اَلْمُهَيْمِنُ، "अलमुहैय्मिनु", दलील के लिए फ़िक़्रह:13

87 اَلْمُؤَخِّرُ، "अल मुवख़्ख़िरु", दलील के लिए देखिए फ़िक़्रह:18

88 اَلْمَوْلٰى، "अल मौला", इर्शाद-ए-बारी तआला है ﴿نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ﴾ बहतरीन मौला (कारसाज़) और बहतरीन मददगार (अल्लाह) है। (अल अनफ़ाल:40)

89 اَلْمُؤْمِنُ، "अल मुअमिनु", देखिए फ़िक़्रह:13

90 اَلنَّصِيْرُ، "अन्नसीरु", दलील ये आयत है ﴿وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَلِيًّا وَّكَفٰى بِاللّٰهِ نَصِيرًا﴾ अल्लाह का वली होना काफ़ी है और अल्लाह का नसीर (मददगार) होना काफ़ी है (अन्निसाअ :45)

91 اَلْهَادِىُ، "अल हादियु", दलील ये है ﴿وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيْرًا﴾ और तेरे रब का हादी (हिदायत देने वाला) और नसीर होना काफ़ी है। (अल फ़ुर्क़ान:31)

92 اَلْوَاحِدُ، "अल वाहिदु", दलील ये है ﴿قُلِ اللّٰهُ خٰلِقُ كُلِّ شَیْءٍ وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ﴾
कह दो, अल्लाह हर चीज़ का ख़ालिक़ है और वही अल वाहिद (अकेला) क़हहार है (अल रअद:16)

93 اَلْوَارِثُ، "अल वारिसु", दलील ये है ﴿وَاِنَّا لَنَحْنُ نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَنَحْنُ الْوٰرِثُوْنَ﴾
और बेशक हम ही ज़िन्दह करते हैं और मारते हैं और हम ही वारिस हैं। (अल हजर:23)

94 اَلْوَاسِعُ، "अल वासिउ", दलील ये है ﴿وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ فَاَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ﴾
और मशिरक़ और मग़रिब अल्लाह ही के हैं,पस तुम जिस तरफ़ मुंह फैरो इसी तरह अल्लाह का वज (चेहरा) है,बेशक अल्लाह वासीअ (वस्अतों वाला) अलीम है (अल बकरा: 115)

95 اَلْوِتْرُ، "अल वित्रु", इसकी दलील हदीस है के "إِنَّ اللّٰه وتر يحب الوتر"
बेशक अल्लाह ﷻ वित्र (एक) है, वित्र को पसन्द करता है। (सहीह बुख़ारी:6410 व सहीह मुसलिम:2677)

96 اَلْوَدُوْدُ، "अल वदूदु", दलील ये है ﴿اِنَّهٗ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيْدُ ۝ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ﴾
बेशक वही (अल्लाह) इब्तदा करता है और लौटाता है और वही ग़फ़ूर वदवद (मुहब्बत करने वाला) है (अल्बरुज़:13/14)

97 اَلْوَكِيْلُ، "अल वकीलु", दलील ये है ﴿فَزَادَهُمْ اِيْمَانًا ۖ وَّقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ﴾
पस इनका ईमान ज़्यादह हो गया और इन्होंने कहा: हमारे लिए हमारा रब काफ़ी है और बहतरीन अल वकील (रिज़्क़ व मुआश का कफ़ील) है (आले इमरान:173)

98 اَلْوَلِیُّ، "अल वलिय्यु", दलील ये है ﴿فَاللّٰهُ هُوَ الْوَلِیُّ وَهُوَ يُحْيِ الْمَوْتٰی﴾
पस अल्लाह ही अल वली (मददगार, दोस्त) है और वही मुर्दों को ज़िन्दह करता है। (अश्शूरा : 9)

99 اَلْوَهَّابُ، "अल वहहाबु", दलील ये आयत है के
﴿رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ﴾
ऐ हमारे रब, हमारे दिलों को हिदायत देने के बाद टेढ़ा ना करना, और अपनी तरफ़ से हमें रहमत अता फ़र्मा, बेशक तू अल वहहाब (अता फ़र्माने वाला है) (आले इमरान:8)

हदीस में ब्यान शुदह अल्लाह ﷻ के अस्मा-ए-हुस्ना(निन्नान्वे नामों) की मुवाफ़िक़त करते हुए इब्न अलक़ैय्म ने अपनी किताब आलाम अल मौक़ईन (3/149, 171) में सदे ज़रीअ के क़ाइदे की ताईद के लिए निन्नान्वे वजूह (दलीलें) ब्यान की हैं और इसी पर इक़्तिसार किया है। (सद्दे ज़राअ का मतलब ये है के किताब व सुन्नत के ख़िलाफ़ तमाम रास्तों को बन्द कर देना ताके बुराई का सद्दे बाब हो जाए /मुतर्जिम) और मैंने अपनी किताब " دراسة حديث : نضر الله امرأ سمع مقالتي ،رواية ودراية "में इस हदीस से इस्तन्बात करते हुए निन्नान्वे फ़ाइदे ब्यान किए हैं (स.201 से 210) ये हदीस नस्रुल्लाह इलख़ अपने अल्फ़ाज़े कसीरह के साथ मुख़्तसर व मतौल मर्वी है।[1] अल्लाह ﷻ के बाज़ नाम ऐसे हैं जो दूसरों पर भी इस्तअमाल किए जाते हैं, जैसा के इर्शादे बारी तआला है: ﴿لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ﴾ तुम्हारे पास तुम्हारी अपनी जानों में से रसूल आ गया, जिसे तुम मुश्किल समझते हो वो इस पर गरां (गुज़रता) है, तुम्हारी बहतरी चाहने वाला, मुअमिनीन पर रऊफ़ रहीम है (अत्तौबह:128) और फ़र्माया:

﴿اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًا ۢ بَصِيْرًا﴾

बेशक हमने इन्सान को (मर्द व औरत के) मिले जुले नुत्फ़े से पैदा किया (ताके) इसे आज़माएं, फिर हमने इसे समीअ (सुनने वाला) (बसीर (देखने वाला) बनाया (अल दहर:2) जिन मअने पर ये नाम दलालत करते हैं इनमें ख़ालिक़ मख़्लूक़ के मुशाबह नहीं और ना मख़्लूक़ ख़ालिक़ के मुशाबह है। बाज़ ऐसे नाम हैं जो सिर्फ़ अल्लाह ﷻ के बारे में कहे जा सकते हैं किसी दूसरे के बारे में ये नाम कहना जाइज़ नहीं मस्लन अल्लाह, रहमान, ख़ालिक़, बारी, राज़िक़ और अस्समद (वग़ैरह) |

इब्ने कसीर सूरह फ़ातिहा के शुरू में बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम की तफ़्सीर लिखते हैं के: "ख़ुलासा ये है के अल्लाह ﷻ के बाज़ नामों का इस्तअमाल मख़्लूक़ के बारे में जाइज़ है और बाज़ का इस्तअमाल मख़्लूक़ के बारे में जाइज़ नहीं है। जैसा के अल्लाह का नाम रहमान, ख़ालिक़ और रज़्ज़ाक वग़ैरह का इस्तअमाल मख़्लूक़ के लिए जाइज़ नहीं है" (तफ़्सीर इब्ने कसीर जिल्द 1 स.119)"

इब्ने अबी ज़ैय्द अल्क़ैय्रवानी फ़र्माते हैं के: "अल्लाह ﷻ अपनी तमाम सिफ़ात और नामों के साथ हमेशा से है वो इससे पाक है के इसकी सिफ़तें मख़्लूक़ हों या इसके नाम मुहद्दिस (नए, ग़ैर क़दीम) हों" अल्लाह ﷻ ही अपनी सिफ़ात के साथ अज़ली व वाबदी मौसूफ़ और अपने नामों के साथ मौसूम है। अल्लाह ﷻ ने अपना ऐसा कोई नाम नहीं रखा जिसके साथ वो पहले मौसूम नहीं था।

अल्लाह ﷻ की सिफ़ात दो तरह की हैं। अव्वल: ज़ाती सिफ़ात जो ज़ात के साथ अज़ल व अबद से क़ाइम व दाइम हैं, मशीअत व इरादे से मुतअलिक़ा नहीं हैं मस्लन अल वजह (चेहरा) अल यद (हाथ) अल हयात (ज़िन्दगी) अल समअ (सुनना) अल बसर (देखना) अलअलू (बुलन्द होना)

दूसरा: सिफ़ाते फ़अलिया जो मशीअत और इरादे से मुतअलिक़ा हैं जैसे अल ख़लक़ (पैदा करना) अल रिज़्क़ (रिज़्क़ देना) अल अस्तवाअ (मस्तवी व बुलन्द होना) अल नज़ूल (नाज़िल होना) और अल मजई (आना) इन सिफ़ात की नौइयत क़दीम है और इनका निफ़ाज़ जदीद है।

---

(1) सुनन तिर्मिज़ी (2685) व क़ुआला: "हाज़ा हदीसुन हसन सहीहुन" व मस्नद अल हमीदी (बतहक़्क़ी:89) व हुवा हदीसुन सहीहुन/ये हदीस मुतावातिर है देखिए नज़्मुल मतनासिर मिनलहदीस अल मुतावातिर (ह.3)

अल्लाह ﷻ से अल ख़लक़ और अल रज़्ज़ाक की दोनों सिफ़्तों से मौसूफ़ है, ऐसा नहीं है के वो पहले मौसूफ़ नहीं था और बाद में मौसूफ़ बन गया। आसमानों और ज़मीन की तख़्लीक़ के बाद अर्श पर इस्तवा हुआ। आसमानों और ज़मीन की तख़्लीक़ के बाद नज़ूल (की सिफ़्त का आग़ाज़) हुआ। अल मजी (आने) की सिफ़्त, इर्शाद-ए-बारी तआला के मुताबिक़ है के ﴿وَجَآءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا﴾ और तेरा रब और फ़रिश्ते सफ़ दर सफ़ आऐंगे (अल फ़ज्र:22) इस सिफ़्त का इज़्हार क़ियामत के दिन बन्दों के दर्मियान फ़ैसले के वक़्त होगा इसकी सिफ़्त "वो जो चाहता है करता है" नौइयत के लिहाज़ से कदीम है और ये मुख्तलिफ अफ़्आल इन अवकात में हुए है | जब अल्लाह ने इन्हें करना चाहा है अपनी ज़ात व सिफ़ात के लिहाज़ से अल्लाह ﷻ ही ख़ालिक़ है इसके सिवा हर चीज़ मख़्लूक़ है। अल्लाह ﷻ की सिफ़्तों में से कोई सिफ़्त मख़्लूक़ नहीं है
इसके नाम मुहद्दिस (जदीद) नहीं हैं और ना इनके रखने की कोई इब्तिदा है। [क़तफ़ अल जनी अल दानी शरह मुक़दमह इब्ने अबी ज़ैय्द अल क़ैय्रवानी स. 93]

बाज़ फ़वाइद

अहले सुन्नत के इस अक़ीदे (अल्लाह ﷻ अर्श पर मुस्तवी हुआ) के सरासर बरअक्स, अशरफ़ अली थानवी देवबन्दी साहब कहते हैं के: "और सिफ़ात क़दीम हैं तो जिस वक़्त अर्श ना था इस्तवाअ उस वक़्त भी था और जिस वक़्त समाअ ना था नजूल इलस्समाअ उस वक़्त भी था......." (मलफ़ूज़ात हकीमुल उम्मत ज. 6 स.102 मलफ़ूज़:192) थानवी साहब के इस क़ौल का आसान अलफ़ाज़ में ये मतलब है के जब अर्श नहीं था तो उस वक़्त भी अल्लाह ﷻ अर्श पर मुस्तवी था। और जब आसमाने दुनिया नहीं था तो उस वक़्त भी हर रात को अल्लाह ﷻ आसमाने दुनिया पर नाज़िल होता था। ये क़ौल सरासर बिदअत है किताब व सुन्नत व इज्माअ और आसारे सलफ़ सालिहीन से इस क़ौल का कोई सुबूत नहीं है। इस क़िस्म के बातिल अक़्वाल की मदद से मुन्करीन सिफ़ाते बारी तआला ये अक़ीदह रखते हैं के अल्लाह ﷻ अर्श पर मुस्तवी नहीं है और ना वो आसमाने दुनिया पर हर रात नाज़िल होता है। इस्तवाअ अलल अर्श से इन लोगों के नज़दीक मुराद इस्तवला (ग़लबा) और नजूल से मुराद रहमत का नजूल है। سبحانه وتعالىٰ عما يقولون علواً كبيراً

☆ हाफ़िज़ इब्न हज़म (मुतावफ्फा 456 ह.) लिखते हैं के:

"واتفقوا على تحريم كل اسم معبد لغير الله عزوجل
كعبد العزى وعبد هبل وعبد عمرو وعبد الكعبة وما أشبه ذالك حاشا عبد المطلب"

और इस पर इत्तफ़ाक़ (इज्मा) है के अल्लाह ﷻ के सिवा, ग़ैरुल्लाह के साथ मन्सूब हर नाम हराम है मसलन अब्दुल अज़ी, अबद हबल, अबद उमरो, अब्दुल कअबा और जो इनसे मुशाबा है सिवाए अब्दुल मुत्तलिब के।
(مراتب الاجماع ص ۱۵۴ باب / الصيد والضحايا والذبائح والعقيقة)

मुल्ला अली क़ारी हनफ़ी (मुतावफ्फा 1014 ह.) लिखते हैं के:

"ولا يجوز نحو عبد الحارث ولا عبد النبي ولا عبرة بما شاع فيما بين الناس"

और अब्दुल हारिस और अब्दुन्नबी जैसे नाम नाजाइज़ हैं। और लोगों में जो मशहूर हो गया है तो इसका कोई ऐतबार नहीं है। (मर्क़ुआतुल मफ़ातीह ज.8 स.513 तहत ह.475 बाब अल असामी, अल फसल अव्वल)

मालूम हुआ के अब्दुन्नबी, अब्दुर्रसूल और अब्दुल मुस्तफ़ा वग़ैरह नाम रखने जाइज़ नहीं हैं।

☆अल्लाह ﷻ के सिफ़ाती नामों इला और रब का फ़ारसी व उर्दू वग़ैरह ज़बानों में तर्जुमा: ख़ुदा है। अबुल फ़ज़ल महमूद आलौसी अल बग़दादी (मुतावफ्फा 1270 ह.) लिखते हैं के:

الـصـفـات عـلـى البـارى تـعـالـىٰ إذا ورد بهـاالإذن مـن الشارع وعلى امتناعه إذاوردالمنع عنه، واختـلفواحيث لا إذن ولا منع فى جواز اطلاقها ماكان سبحانه وتعالىٰ متصفاً بمعناه ولم يكن من الأسـمـاء الأعلام الموضوعة فى سائر اللغات إذليس جوازا طلاق عليه تعالىٰ محل نزاع لأحد، ولـم يـكـن اطـلاقـه مـوهـمـاً نقصاً بل كان مشعراً بالمدح فمنعه جمهور أهل الحق مطلقاً للخطر وجـوزه المعتزلة مطلقاً ،ومال إليه القاضى أبوبكرلشيوع اطلاق خدا نحو وتكرى من غير نكير فكان اجماعاً ورد بأن الإجماع كاف فى الإذن الشرعى إذاثبت "

इस मक़ाम पर ख़ुलासह कलाम ये है के उलमा-ए-इसलाम का इस पर इत्तफ़ाक़ है के बारी तआला के बारे में इन अस्माअ व सिफ़ात का इत्लाक़ (मुतलिक़ इस्तअमाल) जाइज़ है बशर्त ये के इनके बारे में शारअ से (शरीअत में) इजाज़त वारिद है और ये नाम मम्नूअ हैं अगर इनकी मुमानअत वारिद (यानी साबित) है। जिन नामों के बारे में ना इजाज़त है और ना मना, अल्लाह ﷻ के बारे में इनके जवाज़ इत्लाक़ में इख़्तलाफ़ है और अल्लाह ﷻ के इन नामों के साथ मौसूफ़ है। तमाम ज़बानों में अल्लाह ﷻ के बारे में जो नाम लिऐ जाते हैं, इनके जवाज़ इतलाक़ में किसी का भी कोई इख़्तलाफ़ नहीं है। (अगर अल्लाह ﷻ के बारे में ऐसा नाम लिया जाऐ जो इन ज़बानों में नहीं है) और इस नाम के इत्लाक़ से अल्लाह ﷻ की मदह हुई है। नुक्स (ख़ामी) का वहम नहीं होता तो जम्हूर अहले हक़ ने ख़तरे के पैश नज़र इसे मुत्लकन मना कर दिया है जबके मुअतज़िला इसे मुत्लकन जाइज़ समझते हैं।

क़ाज़ी अबू बकर भी इसी तरफ़ माइल हैं (क्यूँकि इला व रब के बारे में) ख़ुदा और (तुर्की ज़बान में) तकरी का लफ़्ज़ बग़ैर इन्कार के मुत्लक़न शाऐ (व मशहूर) है पस ये अजमाअ है (के ख़ुदा का लफ़्ज़ जाइज़ है) और रद किया गया (या वारिद हुआ के) बेशक अगर इज्मा साबित हो जाए तो शरई इजाज़त के लिए काफ़ी है" (रूह अल मआनी ज. 5 जुज़ 9 स. 121 तहत आयह : 180 मिन सूरह अल अअराफ़) इस तवील इबारत का ख़ुलासा ये है के अल्लाह ﷻ के लिए ख़ुदा का लफ़्ज़ बिल इज्माअ जाइज़ है। इसकी ताईद इससे भी होती है के शाह वलीउल्लाह अल देहलवी (मुतावफ्फा 1176 ह.) ने क़ुरआन मजीद के फ़ारसी तर्जुमे में जा बजा, बड़ी कसरत से ख़ुदा का लफ़्ज़ लिखा है मसलन देखिए स. 5 (मतबूआ: ताज कम्पनी लिमिटेड) सअदी शैराज़ी (मुतावफ्फा 692 ह.) ने भी ख़ुदा और ख़ुदा वन्द का लफ़्ज़ कसरत से इस्तअमाल किया है मसलन देखिए बौसतान (स.10) मशहूर अहले हदीस आलिम फ़ाख़िर इला आबादी (मुतावफ्फा 1164 ह.) ने फ़ारसी ज़बान में एक बहतरीन रिसालह लिखा है जिसका नाम "रिसालह निजातियह" है। इस रिसाले में उन्होंने "ख़ुदा" का लफ़्ज़ लिखा है मसलन देखिए (स. 42) इसी तरह और भी बहुत से हवाले हैं। ये किताबें उलमा व अवाम में मशहूर व मअरूफ़ रही हैं। किसी एक मुसलमान ने भी ये नहीं कहा के "ख़ुदा" का लफ़्ज़ नाजाइज़ या हराम या शिर्क है। चौहदवीं पन्द्रहवीं सदी में लोगों का लफ़्ज़ ख़ुदा की मुख़ालफ़त करना इज्माअ के मुख़ालिफ़ होने की वजह से मर्दूद है।

☆सुनन तिर्मिज़ी (3507) वग़ैरह में एक हदीस मर्वी है जिसमें अल्लाह ﷻ के निन्नान्वे नाम मज़्कूर हैं इस हदीस में दर्ज ज़ैय्ल (31) नाम मौजूद हैं जोके शैय्ख़ अब्दुल मुहिसन अल इबाद की तर्तीब में मज़्कूर नहीं हैं।

القابض ،الباسط ، الخافض ، الرافع ،المعز ،المذل ،العدل ،الجليل ،الباعث ،المحصى ،المبدئ ، المعيد ،المحيي ، المميت ، الواجد ،الماجد ،الوالي،المنتقم ،مالک الملک ، ذوالجلال والاكرام، المقسط ، الجامع ، المغني،المانع ،الضار ،النافع، النور،البديع ،الباقى ،الرشيد ،الصبور.

इस रिवायत की सनद वलीद बिन मुसलिम की तदलीस "अल तस्वियह" की वजह से ज़ईफ़ है।

वमा अलैय्ना इल्लल्बलाग़ (27 जुलाई 2005 इ. बयाड़ तहसील कलकोट, कोहसतान, दैर बाला)

शज़रातुज़्ज़हब

"तन्वीर हुसैय्न शाह हज़ारवी"

इमाम अब्दुल अज़ीज़ बिन रफ़ीअ رحمه الله (अल मुतावफ्फा 130 ह.) फ़र्माते हैं के: इमाम अताअ बिन अबी रबाह رحمه الله से एक मस्अला पूछा गया तो इन्होंने फ़र्माया: ‘‘لا أدري’’ मुझे इसके मुताल्लिक़ इल्म नहीं है अब्दुल अज़ीज़ बिन रफ़ीअ फरमाते है के: इमाम अताअ से कहा गया के ‘‘ألا تقول فيها برأيک؟’’ आप अपनी राय से जवाब क्यूँ नहीं देते ? तो इसके जवाब में इमाम अताअ बिन अबी रबाह رحمه الله ने फ़रमाया ‘‘إني استحي من الله أن يدان فى الأرض برأيي’’ मैं अल्लाह ﷻ से इस बात में हया करता हूं के ज़मीन में मेरी राऐ को दीन बना दिया जाए। [सुनन दारमी 1/47 ह.108 व इस्नाद सहीह व अख़रज अना इब्न असाकर फ़ी तारीख़ व मशक़ 43/26, 27, व इस्नाद सहीह]

इमाम अताअ رحمه الله के इस उम्दह क़ौल से मालूम हुआ के कुरआन व हदीस, अक़्वाले सहाबा और इज्मा उम्मत के ख़िलाफ़ अक़ाइद व अहकाम इबादात व मुआमलात में अपनी राऐ से फ़तवा देना गोया के अल्लाह ﷻ की ज़मीन पर अल्लाह ﷻ के दीन के मुक़ाबले में एक नया दीन खड़ा करना है। इस उम्दह क़ौल से उन लोगों को इबरत हासिल करनी चाहिए जो अपने अन्धे मुक़ल्लदीन को क़ील व क़ुआल लैय्त व लअल और ख़िलाफ़ कुरआन व हदीस और हया सौज़ मसाइल से भरपूर किताबों के निफ़ाज़ पर उभारते हैं।